जन गण मन धुन के जनक

कैप्टन राम सिंह ठाकुर

राजेंद्र राजन

जन गण मन धुन के जनक

कैप्टन राम सिंह ठाकुर

राजेन्द्र राजन

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2025

© राजेन्द्र राजन

समर्पण

नेताजी सुभाष चंद्र बोस को

अनुक्रम

यह पुस्तक क्यों ? 4

राजेंद्र राजन

राष्ट्रगान की धुन पर विवाद क्यों? 17

राजेंद्र राजन

आईएनए की रूह और बुलन्दी में राम सिंह का संगीत 38

डॉ. हरिदेव शर्मा

कुछ और गीत कुछ और धुनें 153

कै. राम सिंह

माई फ़ादर : अनसंग सिंगिंग सोल्ज़र 167

रमेश ठाकुर

कदम कदम बढ़ाए जा... 188

आनंद सिन्हा

कुछ पल राम सिंह के गांव में... 208

राजेंद्र राजन

आइएनए गीतों की रचना एवं संगीत 225

कैप्टन राम सिंह

चित्रों में 232

यह पुस्तक क्यों ?

राजेंद्र राजन

मैंने 27 जनवरी, 2016 को नई दिल्ली स्थित नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय को एक लम्बा पत्र प्रेषित किया था। इस पत्र में मैंने निदेशक महोदय से निवेदन किया था कि नेहरू संग्रहालय ने जो सामग्री कैप्टन राम सिंह ठाकुर के विषय में रिकॉर्ड की थी उसे मेरी प्रस्तावित पुस्तक में समावेश करने की अनुमति प्रदान करें । मेरा आग्रह था कि पुस्तक के माध्यम से मैं भारतवर्ष के प्रति राम सिंह ठाकुर के अमूल्य योगदान व अवदान को प्रकाश में लाना चाहता हूं ताकि भावी पीढ़ियां इस महान व युगान्तरकारी पुरुष को याद रख सकें। मैंने यह भी लिखा था कि इस पुस्तक का उद्देश्य कतई भी कमर्शियल नहीं है।

इस विषय में मुझे 7 मार्च 2016 को नेहरू संग्रहालय के शोध अधिकारी श्री जीवन सी रणसिकोटि का पत्र संख्या 53/573/1971- ओएचडी प्राप्त हुआ था। पत्र में कहा गया था कि मैं पहले कैप्टन राम सिंह के एक वारिस यानी उनके सुपुत्र से पहले स्वीकृति प्राप्त करूं ताकि नेहरू संग्रहालय द्वारा संरक्षित सामग्री के प्रकाशन के विषय में मेरे अनुरोध पर आवश्यक कार्यवाही की जा सके।

मैंने कैप्टन राम सिंह ठाकुर के लखनऊ रहने वाले वारिसों से सम्पर्क साधने का

प्रयास किया लेकिन, उनका सही आवासीय पता प्राप्त न होने के कारण मैं सफल नहीं हो सका। लेकिन नवम्बर 2020 के अन्त में मेरा सम्पर्क कैप्टन राम सिंह ठाकुर के सुपुत्र श्री रमेश कुमार जी से हुआ। वे दिल्ली में रहते हैं। उन्होंने पुस्तक प्रकाशन के बारे में हर्ष जताया और अपनी सहमति दी। उन्होंने पुस्तक के लिए कुछ दुर्लभ चित्र भी उपलब्ध कराए।

मई 1999 में जब पहली दफा मेरी भेंट कैप्टन राम सिंह ठाकुर से धर्मशाला के सर्किट हाउस में हुई थी तो उनके सुपुत्र श्री उदय शंकर भी उनके साथ थे। धर्मशाला के समीप नड्डी में रहने वाले कर्नल एस.एस. गुरंग भी उपस्थित थे। कर्नल गुरंग कैप्टन राम सिंह के अंतरंग मित्रों में से एक थे। वे धर्मशाला स्थित मेरे कार्यालय में अक्सर आते-जाते रहते थे। यही नहीं मुझे कर्नल गुरंग के घर भी जाने का सौभाग्य प्रात हुआ था और उन्होंने मुझे कैप्टन राम सिंह से जुड़े अनेक मौलिक दस्तावेज प्रकाशनार्थ दिए थे।

कर्नल एस.एस. गुरंग की प्रेरणा से मैंने 'दी ट्रिब्यून' चंडीगढ़ के लिए एक लेख लिखा था जो उन्होंने दिनांक 4 मई, 2002 को प्रकाशित किया था। कुछ अन्य लेख भी कालांतर में दिव्य हिमाचल, दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका आदि समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए। राम सिंह ठाकुर व उनके पुत्र ने मुझे नेहरू संग्रहालय द्वारा रिकॉर्ड की गई सामग्री की फाईल भी सौंपी थी। उसकी एक प्रति स्वर्गीय कर्नल गुरंग के पास भी

थी जो शायद कर्नल गुरंग से लेकर उन्होंने मुझे इस आशय और विश्वास के साथ सौंपी थी कि एक दिन मैं इसका उपयोग किसी पुस्तक के रूप में कर पाऊं। अत: मुझे यह लगा कि जब कैप्टन राम सिंह ठाकुर व उनके बेटे श्री उदय शंकर की मौखिक सहमति मुझे प्रात थी तो मुझे नेहरू संग्रहालय से स्वीकृति लेने की क्या आवश्यकता है? और फिर यह पुस्तक राष्ट्रहित व जनहित में है। मैं ऐसे व्यक्ति को प्रकाश में लाने का प्रयास कर रहा हूं जो देशप्रेम व राष्ट्रभक्ति का एक महान रोल मॉडल है। जो ताउम्र गुमनामी व उपेक्षा का दंश झेलता रहा। ना ही भारत सरकार, ना ही किसी अन्य बड़े संस्थान ने स्वतंत्रता आंदोलन के संघर्ष में उनकी सेवाओं का स्मरण किया। उन्हें जीते जी या मरणोपरान्त पुरस्कृत करने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। क्योंकि कैप्टन राम सिंह नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की आईएनए में बैंडमास्टर थे, उनकी उपेक्षा स्वाभाविक सी लगती है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू आदि से मतभेद थे। एक प्रकार से कांग्रेस पार्टी जो देश को ब्रितानी हुकूमत से आज़ाद करवाने का सेहरा अपने सिर बांधती है, नेताजी सुभाष व उनकी आईएनए के योगदान को नहीं पचा पायी। यही नहीं, भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी को जो उचित सम्मान मिलना चाहिए था, उसकी ओर भी आज़ादी के 73 साल बाद भी हमारी सरकारों का रवैया संवेदनहीन बना हुआ है। सुभाष की मृत्यु आज तक रहस्यमयी पहेली की तरह हमारे राष्ट्र को मानसिक रूप से उलझाए हुए है। ऐसे माहौल में एक गोरखा सिपाही जिसकी

जड़ें हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला के समीप खनियारा गांव में थीं, के सम्मान के बारे में भारत सरकार की सोच कैसे उनके सम्मान की प्रतीक हो सकती है? उल्टे उनके योगदान को कई बार गौण करने का प्रयास किया जाता रहा है। यह कहकर कि जिस राष्ट्रगान, 'जन गण मन' की रचना रवीन्द्रनाथ टैगोर ने की थी, उन्होंने ही इसका संगीत तैयार किया था, जो वास्तविकता से कोसों दूर है।

यह विवाद का विषय हो सकता है, मगर राष्ट्रगान की मौलिक धुन के रचयिता कैप्टन राम सिंह ही थे, यह सत्य है। अगरचे इस धुन को परिष्कृत कर आज़ादी के बाद इसे राष्ट्रगान की धुन के रूप में अपनाया गया। लेकिन वह दिन दूर नहीं जब देर-सवेर कैप्टन राम सिंह के योगदान को राष्ट्र स्वीकार करेगा। ऐसा न होता तो नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय द्वारा 20 मई 1971 को कैप्टन राम सिंह का मौखिक इतिहास इन्टरव्यू क्यों रिकॉर्ड किया जाता? फिर उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व वाल्मिकी आश्रम में महात्मा गांधी के समक्ष राष्ट्र गान की धुन प्रस्तुत करने का सुनहरी अवसर क्यों प्रदान किया जाता? यहीं नहीं 15 अगस्त 1947 को जब भारतवर्ष ने स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में आंखें खोलीं तो पंडित जवाहर लाल नेहरू के लाल किले की प्राचीर पर प्रथम सम्बोधन से पूर्व कैप्टन राम सिंह को ही राष्ट्रगान की धुन प्रस्तुत करने का गौरव प्रदान किया गया था। तब वे मसूरी में थे। उन्हें विशेष रूप से इस गीत की अदायगी के लिए दिल्ली आमंत्रित किया गया था।

इससे पूर्व विमल राय 'हमराही' (1945) फिल्म में राष्ट्रगान के हिन्दी रूपान्तरण को दर्शकों के समक्ष लाए थे। यह समूचा गीत नाकि इसका संक्षित संस्करण। फिल्म में वह 4 मिनट की अवधि का था। आज़ादी के बाद राष्ट्रगान को 52 सैकण्डस की अवधि में परिमार्जित कर इसे पुर्नरचित किया गया। इसकी मूल धीमी धुन को राम सिंह ने ही फास्ट अर्किस्ट्रा ट्रैक में परिवर्तित किया था। इसके लिए जर्मनी के एक म्यूज़िक डायरेक्टर ने अरेन्जर के रूप में काम किया था। 1945 में 'हमराही' फिल्म के संगीतकार रॉय चन्द बोराल थे और उन्होंने राष्ट्रगान को स्वयं कम्पोज़ की गई धुन में रिकॉर्ड किया था। यह एक समूह गान था जिसे फिल्म के ओपनिंग क्रेडिटस।

नेहरू स्मारक संग्रहालय के मौखिक इतिहास विभाग की एक घोषणा राम सिंह ठाकुर ने 22 मार्च 1990 को की थी। इसमें कहा गया है कि ''मैं इस बात से सहमत हूं नेहरू स्मारक संग्रहालय और लाइब्रेरी के मौखिक इतिहास विभाग के लिए मैंने जो सामग्री रिकॉर्ड करवाई थी, उसका उपयोग ऐतिहासिक शोध या ऐतिहासिक ज्ञान के प्रसार के लिए किया जा सकता है। जैसे उनके द्वारा या उसका उपयोग करने वाले शोध छात्रों द्वारा उसका प्रकाशन व प्रसारण''। इस बात से यह स्पष्ट है कि राम सिंह अपने योगदान के प्रसार के लिए इच्छुक थे और यही ख्वाहिश उन्होंने धर्मशाला में मुझसे भेंट के दौरान ज़ाहिर की थी।

कैप्टन राम सिंह ठाकुर का जन्म 15 अगस्त 1914 को धर्मशाला के समीप